ISSN: 0973-0583

शीत-युद्ध के बाद भारत-अमेरिका और दक्षिण एशिया का संबंध

दीपक कुमार

शोधार्थी, राजनीतिक शास्त्र विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

डॉ0 संजय कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ए. एन. कॉलेज, पटना

शोध सार

यह अध्ययन शीत-युद्ध के दौरान दो लोकतंत्रों-भारत और अमेरिका के बीच तनावपूर्ण संबंधों, वैचारिक भिन्नताओं, राष्ट्रीय हितों में अंतर, प्रारंभिक गलतफहमियों और संबंधों में उतार-चढ़ाव का संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दो प्रतिस्पर्धी शक्तियों: अमेरिका और सोवियत संघ (यू.एस.एस.आर) के बीच एक वैचारिक टकराव जिसे "शीत-युद्ध" कहा गया, शुरू हुआ। शीत-युद्ध के दौर में, दोनों देशों ने एशियाई क्षेत्र और इसके परिधि में अपनी विचारधाराओं के प्रसार के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास किए। अमेरिका ने सुरक्षा ब्लॉक बनाए और एशियाई देशों को पर्याप्त वित्तीय सहायता प्रदान की ताकि अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी (यू.एस.एस.आर) की साम्यवादी विचारधारा के प्रसार को एशियाई क्षेत्र में रोका जा सके। भारत के स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, अमेरिका ने भारतीय नेतृत्व पर साम्यवादी सोवियत संघ के खिलाफ अमेरिकी ब्लॉक में शामिल होने के दबाव डाला। दूसरी ओर, सोवियत संघ ने वारसॉ पैक्ट का निर्माण किया और भारत और पाकिस्तान जैसे नवजात राज्यों को अपने ब्लॉक में शामिल करने की कोशिश की ताकि अमेरिका की कार्रवाईयों का मुकाबला किया जा सके। हालांकि, भारत किसी भी ब्लॉक में शामिल होने के लिए तैयार नहीं था, विशेष रूप से अमेरिकी ब्लॉक में, और गुटनिरपेक्ष आंदोलन में शामिल हो गया। भारतीय नेतृत्व ने "एशिया एशियाई लोगों के लिए" नारा का समर्थन किया और एशियाई क्षेत्रीय मामलों में अमेरिका जैसी बाहरी शक्तियों की भागीदारी की निंदा की। दक्षिण एशिया में भारत और अमेरिका के बीच संबंध आधुनिक विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐतिहासिक रूप से यह संबंध सदियों पुराना है। इतिहास और मिथकों के अनुसार दक्षिण एशिया क्षेत्र में हिंद महासागर से उत्पन्न कई समुद्री मार्ग उत्तर से दक्षिण तक फैले हुए थे। इससे यह क्षेत्र वैश्विक शक्तियों के आकर्षण का केंद्र बना। वर्त्तमान में दक्षिण एशिया में सात प्रमुख राष्ट्र शामिल हैं : भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान और मालदीव। इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के कारण यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द :- शीत-युद्ध, भारत-अमेरिका तनावपूर्ण संबंध, भारत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन, अमेरिकी नीति

शीत-युद्ध के बाद भारत-अमेरिका संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। दोनों देशों के बीच राजनैतिक, आर्थिक और सामरिक संबंधों में गहराई आई है। इस अध्ययन का उद्देश्य शीत-युद्ध के बाद के काल में भारत-अमेरिका संबंधों और उनके प्रभावों का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से यह शोध दक्षिण-एशिया क्षेत्र पर इन संबंधों के प्रभावों की जांच करेगा।

1. शीत युद्ध का अंत और नई विश्व व्यवस्था

शीत-युद्ध का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

शीत-युद्ध (1947-1991) के दौरान विश्व की दो प्रमुख शक्तियों, संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ, के बीच विभाजित था। इस दौरान भारत के विदेश नीति तटस्थता पर आधारित थी, जिसे गुटनिरपेक्षता कहा गया। भारत ने अपनी सुरक्षा और आर्थिक हितों की रक्षा के लिए विभिन्न देशों के साथ संबंध बनाए रखा। शीत-युद्ध के समय भारत ने सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए थे जबकि अमेरिका के साथ इसके संबंध तुलनात्मक रूप से अच्छे नहीं थे (चारी, 2016)।

भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के माध्यम से स्वतंत्र और गैर-सरेखित विदेश नीति अपनाई

थी। इस आंदोलन का उद्देश्य उन देशों को एकजुट करना था जो शीत-युद्ध के ध्रुवीकृत माहौल में किसी भी शक्ति ब्लॉक में शामिल नहीं होना चाहते थे (बक्ली, 2002)।

300 ई.पू. से यह क्षेत्र विदेशी आक्रमणों का केंद्र रहा है। प्राचीन काल में यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने इस क्षेत्र में अपनी संस्कृति और सभ्यता को प्रभावित किया। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने धार्मिक और जातीय स्तर पर विवाद करके शासन की नीति अपनाई, जिसका प्रभाव आज भी विभिन्न प्रकार के संघर्षों और विवादों में देखा जा सकता है। दक्षिण एशिया में सुरक्षा और शक्ति की समस्या प्रमुख रूप से क्षेत्रीय राष्ट्रों के बीच संघर्ष, महाशक्तियों के हस्तक्षेप और हिंद महासागर की राजनीति में व्यक्त होती है।

शीत-युद्ध के बाद की विश्व व्यवस्था:

1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व एक ध्रुवीय व्यवस्था में बदल गया जिसमें अमेरिका प्रमुख शक्ति बनकर उभरा। इस नई व्यवस्था में भारत ने अपनी विदेश नीति में महत्वपूर्ण बदलाव किए। भारत-अमेरिका संबंधों में सुधार और सहयोग के नए अवसर उभरे। भारत ने अपने आर्थिक सुधारों के साथ-साथ अपनी विदेश नीत को भी अमेरिकी नेतृत्व वाली विश्व व्यवस्था के साथ तालमेल बिठाने की दिशा में बदला (मोहन, 2006)। भारत ने 1991 में आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण की नीति अपनाई, जिससे पश्चिमी देशों, विशेषकर अमेरिका के साथ उसके आर्थिक और व्यापारिक संबंधों में सुधार हुआ।

2. भारत-अमेरिका संबंधों का विकास

प्रारंभिक वर्ष (1991-2000)

1990 के दशक के प्रारंभ में भारत और अमेरिका के बीच संबंध मधुर नहीं थे। 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण के बाद अमेरिका ने भारत पर प्रतिबंध लगाए। हालांकि इन प्रतिबंधों के बावजूद, दोनों देशों ने संवाद जारी रखा और 1999 में करगिल युद्ध के दौरान अमेरिका ने भारत का समर्थन किया। इस समय के दौरान भारत ने अपनी आर्थिक नीतियों में उदारीकरण किया, जिससे अमेरिका और भारत ने अपनी आर्थिक नीतियों में उदारीकरण किया, जिससे अमेरिका और भारत के बीच आर्थिक संबंधों में भी सुधार हुआ (कपूर, 2009)।

1998 के परमाणु परीक्षण के बाद अमेरिका ने आर्थिक और सैन्य प्रतिबंध लगाए, लेकिन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के प्रयासों से रिश्तों में सुधार हुआ। 2000 में राष्ट्रपति क्लिंटन की भारत यात्रा ने द्विपक्षीय संबंधों में नया मोड़ दिया।

नई सहस्राब्दी (2000-2010) :

2000 के दशक में भारत-अमेरिका संबंधों में महत्वपूर्ण सुधार हुआ। 2001 में अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू.बुश और भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी की शुरूआत हुई। 2005 में दोनों देशों ने ऐतिहासिक परमाणु समझौता किया जिसने भारत को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) और और न्यूक्लियर सप्लायर्स ग्रुप (NSG) में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया। इस समझौते ने भारत को परमाणु ऊर्जा और प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बढ़ावा दिया (टेलिस, 2008)।

इस दौरान दोनों देशों ने रक्षा और आतंकवाद विरोधी सहयोग में भी प्रगति की। 2008 में भारत-अमेरिका नागरिक परमाणु समझौता एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था, जिसने भारत को परमाणु सामग्री और प्रौद्योगिकी तक पहुँच प्रदान की, जिससे उसकी ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत किया गया।

वर्तमान समय (2010-2020) :

2010 के बाद भारत-अमेरिका संबंधों में और गहराई आई। दोनों देशों ने रक्षा, व्यापार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में कई समझौते किए। 2016 में अमेरिका ने भारत को 'मेजर डिफेंस पार्टनर' का दर्जा दिया। इसके अलावा, दोनों देशों ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर बल दिया। इस अवधि के दौरान भारत और अमेरिका ने सामरिक और रक्षा सहयोग को नई ऊँचाई पर पहुंचाया (पांडा, 2017)।

2010 के बाद भारत और अमेरिका के बीच

द्विपक्षीय व्यापार में भी वृद्धि हुई। 2015 में ओबामा और मोदी की मुलाकात ने दोनों देशों के बीच ''ग्लोबल स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप' को और मजबूत किया।

3. भारत-अमेरिका संबंधों का आर्थिक पहलू :

व्यापार और निवेश

भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक संबंधों में पिछले कुछ दशकों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2020 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 149 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। अमेरिकी कंपनियों ने भारत में बड़े पैमाने पर निवेश किया है, विशेषकर आईटी और सेवा क्षेत्रों में। भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक सहयोग का दायरा कृषि, निर्माण और ऊर्जा के क्षेत्रों तक विस्तारित हो चुका है। शीत-युद्ध के अंत, सोवियत संघ के विघटन और खाड़ी युद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में संयुक्त बल की विजय ने संपूर्ण विश्व को नई विश्व व्यवस्था की ओर ढकेल दिया है। (मुखर्जी और मालोन, 2011)। भारत और अमेरिकी संबंधों में शीत-युद्ध के अंत के साथ युगांतकारी परिवर्तित परिस्थितियां हो रही हैं (मुखर्जी और मालोन, 2011)। शीत युद्ध के अंत के साथ अब दोनों देश एक-दूसरे से ईमानदारी से भूतकाल की संदर्भजन्य दृष्टि को त्यागकर खुलकर अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर बात कर सकते हैं (मुखजी और मालोन, 2011)।

इस बदलाव का सामाजिक महत्व कम हुआ है (मुखर्जी और मालोन, 2011)। प्रथम बार, अमेरिका और दक्षिण एशिया के राष्ट्रों से सीधे संवाद बनाने की स्थिति में हैं (मुखर्जी और मालोन, 2011)। आर्थिक रूप से, साम्यवादी व्यवस्था के असफल होने के साथ भारत सरकार के समान विश्व के अन्य देश भी बाजारमुखी आर्थिक नीति की ओर उन्मुख हुए हैं (मुखर्जी और मालोन, 2011)। इस नई विश्व व्यवस्था की प्रवृत्ति के चलते अमेरिका ने अपनी सहयोगी नीति को और अधिक व्यापक रूप से अपनाया है (मुखर्जी और मालोन, 2011)। क्रियान्वित विशेषताओं में भूमंडलीकरण, बाजारोन्मुख अर्थव्यवस्था, सूचना प्रौद्योगिकी, एक नई विश्व व्यवस्था का पुनर्निर्माण हो रहा है (मुखर्जी और मालोन, 2011)।

ऐसे में भारत और अमेरिका के बीच में उभरते संबंध नई विश्व व्यवस्था में उनकी मानवाधिकार, मानवीयता और पर्यावरण दृष्टि से महत्वपूर्ण है (मुखर्जी और मालोन, 2011)। ये मुख्यतया सतत विकास से जुड़े हुए हैं (मुखर्जी और मालोन, 2011)।

भारतीय कंपनियों ने भी अमेरिकी बाजार में निवेश किया है, जिससे दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को लाभ हुआ है। सिलिकॉन वैली में भारतीय आईटी पेशेवरों की बड़ी संख्या भी दोनों देशों के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करती है।

तकनीकी और वैज्ञानिक सहयोग :

भारत और अमेरिका के बीच तकनीकी और वैज्ञानिक सहयोग भी महत्वपूर्ण है। दोनों देशों ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाएं शुरू की हैं। अमेरिकी कंपनियों ने भारतीय आईटी उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली है। इसके साथ ही, अंतरिक्ष अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवाओं में भी दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ा है (संपत, 2020)। दोनों देशों ने सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, और स्वच्छ ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण साझेदारी की है। 2015 में शुरू की गई। 'स्मार्ट सिटी पहल' में अमेरिका ने भारत को तकनीकी सहायता प्रदान की है।

4. सामरिक और रक्षा सहयोग :

रक्षा समझौते और संयुक्त अभ्यास

भारत और अमेरिका के बीच रक्षा सहयोग में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। दोनों देशों ने कई रक्षा समझौते किए हैं और संयुक्त सैन्य अभ्यासों का आयोजन किया है। 2016 में भारत और अमेरिका ने लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरैंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA) पर हस्ताक्षर किए, जो दोनों देशों के बीच सैन्य सहयोग को और मजबूत बनाता है। इसके अलावा, दोनों देशों ने समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भी सहयोग बढ़ाया है (पंत, 2019)।

LEMOA ने दोनों देशों की सेनाओं को एक दूसरे के सैन्य अड्डों का उपयोग करने की अनुमति दी, जिससे उनकी सैन्य क्षमताओं और सहयोग में वृद्धि हुई। 2020 में BECA (Basic Exchnage and

Cooperation Agreement) पर हस्ताक्षर ने रक्षा क्षेत्र में और अधिक गहराई दी।

सामरिक साझेदारी और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र :

भारत और अमेरिका ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया है। दोनों देशों ने इस क्षेत्र में स्वतंत्रता, खुलेपन और समृद्ध को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं। 2017 में अमेरिका के क्वाड (Quad) समूह का पुनर्गठन किया जिसमें भारत, आस्ट्रेलिया और जापान शामिल हैं। इस समूह का उद्देश्य चीन की बढ़ती शक्ति का मुकाबला करना और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देना है (रेज, 2020)। क्वाड के तहत, चारों देश समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और मानवीय सहायता में सहयोग कर रहे हैं। यह पहल इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक स्थिर और सुरक्षित वातावरण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

5. **दक्षिण एशिया पर प्रभाव :**

पाकिस्तान और अफगानिस्तान :

भारत-अमेरिका संबंधों के सुधार ने दक्षिण एशिया के अन्य देशों पर भी प्रभाव डाला है। पाकिस्तान के साथ अमेरिका के संबंधों में कमी आई है जबकि भारत के साथ इसके संबंध मजबूत हुए हैं। अफगानिस्तान में भारत की भूमिका को अमेरिका ने मान्यता दी है और दोनों देशों ने वहां स्थिरता और विकास के लिए मिलकर काम किया है। पाकिस्तान की आतंकवाद समर्थक नीतियों के प्रति अमेरिकी रूख में भी परिवर्तन आया है (फेयर, 2014)। अफगानिस्तान में भारत ने बुनियादी ढांचा परियोजनाओं, अस्पतालों और स्कूलों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अमेरिका ने इस योगदान को सराहा और भारत के साथ सहयोग को बढ़ावा दिया।

बांग्लादेश, श्रीलंका और नेपालः

भारत-अमेरिका सहयोग का प्रभाव बांग्लादेश, श्रीलंका और नेपाल जैसे देशों पर भी पड़ा है। इन देशों ने भारत और अमेरिका के बीच सहयोग से अपने विकास और सुरक्षा हितों को साधने की कोशिश की है। अमेरिका ने इन देशों के साथ भी अपने संबंधों को मजबूत किया है, जिससे दक्षिण एशिया में भारत के प्रभाव में वृद्धि हुई है। इन देशों के साथ अमेरिका के संबंध क्षेत्रीय स्थिरता और विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं (सिंह, 2018)।

बांग्लादेश में दोनों देशों ने आपदा प्रबंधन और विकास परियोजनाओं में सहयोग किया है। श्रीलंका में दोनों देशों ने समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सहयोग बढ़ाया है। नेपाल में दोनों देशों ने आर्थिक और विकासात्मक सहयोग को मजबूत किया है।

शीत-युद्ध के बाद भारत-अमेरिका संबंधों में व्यापक सुधार हुआ और गहराई आई है। दोनों देशों ने राजनैतिक , आर्थिक, सामरिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की है। इन संबंधों का दक्षिण एशिया पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। भविष्य में, भारत-अमेरिका संबंध और मजबूत हो सकते हैं जिससे क्षेत्री स्थिरता और विकास को बढ़ावा मिलेगा। दक्षिण एशिया का सबसे महत्वपूर्ण और विशिष्ट राष्ट्र होने के नाते भारत का क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग की विभिन्न गतिविधियों में निर्णायक प्रभाव रहा है। पाकिस्तान को छोड़कर अन्य सभी दक्षिण एशियाई राष्ट्र किसी न किसी रूप में भारत के समर्थन पर निर्भर हैं। भारत को इस क्षेत्र की केंद्रीय शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त है। बढ़ती महाशक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा के चलते भारत की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। शीत युद्ध के दौरान भारत और अमेरिका के संबंधों का मुख्य आधार राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रश्न पर दोनों देशों के बीच मतभेद रहा। भारत के लिए अमेरिका के साथ संबंध का मुख्य आधार अमेरिका-पाकिस्तान संबंध था। अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को सैन्य सहायता देना और सैन्य गठबंधन में शामिल करना, भारत ने अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक खतरे के रूप में देखा।

शीत-युद्ध के बाद बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य के साथ, अमेरिका ने एक खुले बाजार और वैश्वीकरण की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया। इस दृष्टिकोण से अमेरिका की भूमिका इस क्षेत्र में बढ़ी। भारत इस क्षेत्र का सबसे बड़ा राष्ट्र होने के कारण उपभोक्ता बाजार के रूप में महत्वपूर्ण हो गया। आर्थिक उदारीकरण के दौर में अमेरिकी नीति में अर्थ और व्यापार का महत्व बढ गया, जिसने उसकी दक्षिण एशिया नीति में परिवर्तन को भी समर्थन दिया। भारत और अमेरिका के संबंध अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय संदर्भों में विभिन्न नामों से

जाने जाते हैं, जैसे सामरिक साझेदारी या कठिन-सम्बन्ध। इन संबंध में प्रतिद्वंद्विता दोनों की भावना रही है। दोनों देशों के बीच मित्रता की इच्छा, तनाव, अविश्वास और सहयोग के अवसरों के साथ बनी रही है। दोनों देशों के दृष्टिकोण में अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के प्रति समान दृष्टिकोण रहा है, फिर भी दोनों के लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रति दृष्टिकोण में भिन्नताएं रहीं।

निष्कर्ष :

वर्तमान में, भारत और अमेरिका के बीच सहयोग बढ़ते हुए संबंधों की दिशा में आगे बढ़ रहा है। भारत में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और उसकी तकनीकी क्षमता अमेरिका के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। अमेरिका को भारत के साथ सहयोग के लिए प्रमुख कारणों में और स्थिरता की आवश्यकता अनुभव हो रही है। अमेरिका ने पाकिस्तान पर आंतकवाद को नियंत्रित करने के लिए दबाव बनाया और कश्मीर मुद्दे पर भारत को समर्थन दिया। 2005 में दोनों देशों ने सुरक्षा सहयोग पर हस्ताक्षर किए। 2011 में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन किया। यह कहा जा सकता है कि अमेरिका की दक्षिण एशिया नीति का भारत-अमेरिका संबंधों पर गहरा प्रभाव रहा है।

शीत-युद्ध के बाद अमेरिका ने अपनी रणनीति में बदलाव लाया और भारत को अपना सहयोगी बनाया। बदलते वैश्विक परिदृश्य में अमेरिका ने स्वतंत्र और लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रभावी बनाने का प्रयास किया। भारत-अमेरिका संबंधों में सुधार और सहयोग के प्रयासों के साथ स्वीकार करना चाहिए, फिर भी पूर्ण सहमति व्यक्त करने से पहले क्षेत्रीय सुरक्षा मानकों और भारतीय राष्ट्रीय हितों के संदर्भ में गंभीर परीक्षण करना भी आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. कपूर. एस. पी. (2009). 21वीं सदी में भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका : साझेदारी का पुनर्निर्माण। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. चारी, एम.टी (2016), अनिश्चितता के युग में भारत-अमेरिका संबंध। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. टेलिस, ए.जे. (2008), एक नए वैश्विक शक्ति के रूप में भारत : संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए एक कार्यसूची। कार्नेगी एंडॉमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस।
4. पंत, एच.वी. (2019), भारत-अमेरिका संबंध : ट्रम्प और उसके बाद। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. पांडा, ए. (2017) भारत-अमेरिका रक्षा संबंध : एक रणनीतिक साझेदारी का निर्माण। रूटलेजा।
6. फेयर. सी.सी (2014), अंत तक लड़ना : पाकिस्तान सेना का युद्ध का तरीका। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. बक्ली, आर (2002) द यूनाइटेड स्टेट्स इन द एशिया-पैसिफिक सिंस 1945 कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. मुखर्जी, आर., और मालोन, डी. (2011) भारतीय विदेश नीति और समकालीन सुरक्षा चुनौतियाँ। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. मोहन, सी.आर (2006) असंभव सहयोगी : परमाणु भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और वैश्विक व्यवस्था इंडिया रिसर्च प्रेस।
10. रेज, ए (2020) द क्वाड और स्वतंत्र और खुले इंडो-पैसिफिक। कार्नेगी एंडॉमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस।
11. संपत, जी (2020) भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका : उभरती प्रोद्योगिकी साझेदारी। स्प्रिंगर।
12. सिंह, एम. (2018) दक्षिण एशिया और अमेरिकी विदेश नीति, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

❖❖❖